Vol 5 Issue 7 April 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

## *Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 7 | April - 2016

Review Of Research

# गोविंद निहलानी की फिल्मों में सामाजिक यथार्थ
## *(आक्रोश एवं अर्ध सत्य के विशेष संदर्भ में)*

*मनोज कुमार भट्ट*
*शोधार्थी,एम.फिल.–मीडिया स्टडीज़, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग,*
*कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवम जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर,छत्तीसगढ़.*

*मनोज कुमार भट्ट*

***शोध–सारांश***

हिन्दी सिनेमा अपने प्रारंभ से ही सामाजिक यथार्थ को दिखाता रहा है तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का हिन्दी सिनेमा ने बखूबी निर्वाह किया है। उसी कारण सिनेमा ने भारतीय जन–जीवन को अपने आरंभ से ही प्रभावित किया। शायद सिनेमा नहीं होता तो मनुष्य अपने को भीतर से नहीं पहचान पता। सिनेमा का हर दृश्य दर्शकों के मनोविज्ञान से खेलता है और दर्शक खुद को फिल्म से जोड़ता है और ये तभी संभव है, जब फिल्म का कथ्य एक स्वस्थ परिदृश्य अथवा दूसरे शब्दों में कहें तो सामजिक यथार्थ पर आधारित हो इसी तरह के हिन्दी सिनेमा के एक फिल्मकार हैं 'गोविन्द निहलानी', जिन्होंने हिन्दी सिनेमा को विश्वस्तरीय विचारशील, गंभीर और कलात्मक फिल्में दीं। गोविन्द निहलानी ने अपनी फिल्मों में सामाजिक सरोकारों को कलात्मकता तथा व्यवसायिकता के मिलन से जिस यथार्थता से दिखाया, उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। गोविन्द निहलानी की सामाजिक व राजनीतिक संवेदनशीलता की वजह से उन्होंने सामाजिक दृष्टि से कई श्रेष्ठ फिल्में बनाई। जिसमें उन्होंने समाज के यथार्थ को बड़ी सत्यता के साथ दर्शाया। उन्हीं फिल्मों में उनकी दो फिल्में आक्रोश एवं अर्ध सत्य तत्कालीन समाज के सामाजिक यथार्थ को दिखाती ही हैं, साथ ही समाज की सोच पर एक तीखा प्रहार करती हैं। इस अध्ययन में गोविन्द निहलानी की फिल्मों आक्रोश तथा अर्ध सत्य के विश्लेषण के जरिए ये पता लगाने का प्रयास किया गया है कि सिनेमा और समाज, सामाजिक यथार्थ का कितना गहरा सम्बंध है तथा गोविन्द निहलानी की फिल्में किस तरह सामाजिक यथार्थ के जरिए समाज के लोगों पर प्रभाव डालती हैं एवं समाज को प्रतिबिंबित करती हैं।

***मुख्य शब्द :*** गोविन्द निहलानी, सामाजिक यथार्थ, आक्रोश, अर्ध सत्य, हिन्दी सिनेमा, सिनेमेटोग्राफर, निर्देशक, साहित्य, रंगमंच।

***परिचय***

प्रारम्भ में दादा साहब फाल्के से लेकर आज सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर के नए फिल्मकारों के साथ भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवर्तनों को देखा है और साथ ही उनके साथ जुड़ा रहा है। इसलिए लिए हिंदी सिनेमा केवल भारत में ही नहीं पूरे विश्व में विशिष्ट स्थान रखता है। भारत में हिंदी सिनेमा का यहाँ के जन–जीवन पर एक खासा प्रभाव है। ये भारतीय समाज पर प्रत्यक्ष रूप में प्रभाव डालता है। जो कि इसे एक प्रभावशाली संचार माध्यम के रूप में स्थापित करता है। इसकी यही क्षमता इसे बेजोड और अद्वितीय बनाती है। इसी भारतीय हिंदी सिनेमा के श्रेष्ठ फिल्मकार हैं गोविन्द निहलानी। जिनको एक सामानांतर सिनेमा का फिल्मकार माना जाता है। गोविन्द निहलानी ने एक सिनेमेटोग्राफर के तौर पर हिंदी सिनेमा में शुरुआत की और धीरे–धीरे अपने को लेखक–निर्देशक के तौर पर स्थापित किया। गोविंद निहलानी की राजनीतिक–सामाजिक मुद्दों पर गहरी समझ तथा प्रखरता एवं समाज तथा समाज में रहने वाले लोगों के मनोविज्ञान पर पकड़ उनको सामाजिक यथार्थपरक विषयों पर फिल्म बनाने वाले फिल्मकारों में विशिष्ट स्थान पर रखती हैं। गोविन्द निहलानी ने वर्ष १९८० में बतौर निर्देशक 'आक्रोश' से पदार्पण किया तथा उसके बाद 'विजेता' (१९८२), 'अर्ध सत्य' (१९८३), 'पार्टी' (१९८४), 'आघात' (१९८५), 'दृष्टि' (१९९०), 'पिता' (१९९१), 'रूक्मावती की हवेली' (१९९१), 'द्रोहकाल' (१९९४), 'संशोधन' (१९९६), 'हजार चौरासी की माँ' (१९९७), 'तक्षक' (१९९९) , 'देहम' (२००१), 'देव' (२००४) तक उनकी ये फिल्में सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं। इन फिल्मों के विषय सामाजिक समस्याओं, सम्बन्धों, संघर्ष राजनीतिक–सामाजिक भ्रष्टाचार, समाज व सामजिक लोगों की मनोवैज्ञानिक स्थितियां, आतंकवाद, नक्सलवाद, स्त्री–पुरुष सम्बन्ध, माँ–पुत्र एवं माँ–बेटी के सम्बन्ध, मानवीय सम्बन्ध जैसे गहन एवं गूढ़ विषयों पर उन्होंने समाज को उसका आईना दिखाती हुई यथार्थपरक फिल्में बनायीं। उनकी साहित्य एवं रंगमंच पर भी गहरी पकड़ थी। जिसका इस्तेमाल उन्होंने अपनी फिल्मों में बखूबी किया।

गोविन्द निहलानी की हर फिल्म समाज की तात्कालिक सामाजिक घटनाओं पर आधारित है। जिनमें वो सामाजिक अन्याय,

संघर्ष, आतंक, अत्याचार, शोषण, नक्सलवाद जैसे गम्भीर सामाजिक मुद्दों को उठाते हैं। 'गोविन्द निहलानी सामजिक एवं राजनितिक हलचलों के प्रति काफी सवेदनशील रहे हैं । इसी ने, उन्हें सामाजिक दृष्टि से कई फिल्में बनने के लिए प्रेरित भी किया और बाध्य भी। उनकी फिल्में सामाजिक-राजनितिक, चिंता-चिंतन से मुक्त नहीं हैं। वे प्रत्यक्षतः सामाजिक सरोकारों के फिल्मकार हैं।'[१]

'ये एक ऐसा दौर है, जब कला और लोकप्रिय सिनेमा के बीच की खाई टूटती नज़र आ रही है । यदि कलात्मक फिल्में बनाने वाले ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक अपनी बात पहुँचाने के लिए लोकप्रिय विधा का सहारा ले रहे हैं, तो व्यवसायिक फिल्में बनाने वाले इस विधा में अपने समय के सवालों से दो-चार होने का प्रयास कर रहे हैं। फिल्में समाज से निरपेक्ष होकर नहीं बन सकती। उसमें हमारे समय का प्रतिबिम्ब व्यक्त होना अनिवार्य है।'[२] यही कार्य किया है, हिन्दी सिनेमा के फिल्मकार गोविन्द निहलानी ने अपनी सामजिक यथार्थ तथा सरोकार वाली फिल्मों के द्वारा जहाँ उनकी फिल्में समाज को एक बेहतर समाज बनाने की दिशा देती हैं ।

### *अध्ययन के उद्देश्य :*

***अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं –***

१. फिल्म और समाज के सम्बन्ध का अध्यन करना ।
२. फिल्म आक्रोश सामाजिक यथार्थ का अध्ययन करना ।
३. फिल्म अर्ध सत्य के सामाजिक यथार्थ का अध्ययन करना ।
४. गोविन्द निहलानी की फिल्मों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

### *अध्ययन की परिकल्पनाएं :*

***अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्न प्रकार से हैं –***

१. फिल्म और समाज का आपस में गहरा सम्बन्ध होता है ।
२. गोविन्द निहलानी की फिल्में सामजिक यथार्थ पर आधारित होती हैं ।
३. गोविन्द निहलानी की फिल्में समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं।

### *अध्ययन की सीमाए :*

गोविन्द निहलानी ने अपनी सारी फिल्में सामाजिक यथार्थ को लेकर बनाई हैं, उनकी इन्ही फिल्मों में से आक्रोश तथा अर्ध सत्य को चुना गया है। जिनके जरिये प्रभाव को समग्र में स्थापित करना मेरे शोध की सीमायें हैं। इनकी फिल्मों में कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनके बारे में चर्चा करना सम्भव नहीं होगा ।

### *शोध प्रविधि :*

प्रस्तुत आलेख में प्रयुक्त प्राथमिक आंकड़ो का संकलन विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति की सहायता से किया गया है। स्वनिर्मित प्रश्नावली की सहायता से फिल्म, ललित कलाएं, मीडिया संस्थान, रंगमंच संस्थान से जुड़े लोगो से तथ्य संकलित किये गये तथा यह सारे संस्थान व लोग जिनसे अध्ययन के लिये नमूने लिये गये, नई दिल्ली में स्थित हैं। कुल १०० प्रश्नावलियों का वितरण किया गया, जिसमें से ७३ पूरित रूप में प्राप्त हुई जिनका प्रतिशत आवृत्ति पद्धति की सहायता से निकाला गया है।

### *आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण :*

प्रस्तुत अध्ययन के कुल उत्तरदाताओं मे से ५७ प्रतिशत (४३) पुरुष, ४३ प्रतिशत (३२) महिला प्रतिभागी हैं। सभी प्रतिभागी २२ से ४० के आयुवर्ग में आते हैं। कुल उत्तरदाताओं में से लगभग ५५ प्रतिशत लोग फिल्मों से, २० प्रतिशत लोग रगमंच से, १५ प्रतिशत लोग मीडिया संस्थानों से तथा १० प्रतिशत लोग ललित कालाओं से जुड़े हैं। उत्तरदाताओं ने हिन्दी सिनेमा के समाज के प्रतिनिधित्व कैसे करता है, के सवाल पर २० प्रतिशत लोगों ने कहा सकारात्मक रूप से १५ प्रतिशत लोगो ने कहा नकारात्मक रूप से ५० प्रतिशत लोगों ने कहा कि मिले-जुले रूप से तथा १५ प्रतिशत लोगो का जवाब था पता नहीं। कुल ६० प्रतिशत लोगों ने माना कि हिन्दी फिल्मों द्वारा सम्प्रेषित सन्देशों का समाज पर सकरात्मक प्रभाव पड़ता है, २५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, व अन्य १० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा आंशिक प्रभाव पड़ता है और ५ प्रतिशत लोगो ने इसके प्रभाव को नहीं माना। गोविन्द निहलानी की फिल्मों के विषय सामाजिक यथार्थ पर आधारित होने को लेकर ७० प्रतिशत लोगों ने इसका हां में जवाब दिया, ५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा पता नहीं, १५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि आंशिक रूप से तथा १० प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ना के रूप में जवाब दिया। क्या समाजिक यथार्थ से जुड़ी फिल्मों के द्वारा समाज में परिवर्तन संभव है के जवाब में ८८ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ तथा १२ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ना कहा।

गोविन्द निहलानी की फिल्मों के सकारात्मक सामाजिक प्रभाव के बारे में पूछे जाने पर ६५ प्रतिशत लोगों ने इसका प्रभाव सकारात्मक पड़ता है, ३५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा नकारात्मक प्रभाव के बारे कहा। गोविन्द निहलानी की फिल्में आक्रोश एवं अर्ध सत्य की विषय वस्तु सामाजिक यथार्थ को दर्शा पाती है के जवाब में ७५ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में जवाब दिया तथा २५ प्रतिशत ना में जवाब दिया। क्या हिन्दी सिनेमा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं के जवाब में ८८ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हां में जवाब दिया और १८ प्रतिशत उत्तरदादाओं ने ना में जवाब दिया। इस आधार पर हम कह सकते है कि गोविन्द निहलानी अपनी

फिल्मों के जरिए सामाजिक यथार्थ का चित्रण कितनी खूबसूरती से करते हैं कि उनकी फिल्में समाज से अपना एक गहरा संबंध तो बनाती ही हैं तथा समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव भी छोड़ी है। साथ ही भारतीय हिन्दी सिनेमा व समाज का आपस में गहरा सम्बन्ध है,एक तरह से दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

***विश्लेषण :***

गोविन्द निहलानी की दोनों फिल्में तत्कालीन समय के सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं। आक्रोश एक ऐसे आदिवासी किसान भीखू लहण्या की कहानी है, जिसकी पत्नी नागी का बलात्कार तथा हत्या, उसी इलाके के पूंजीपतियों के द्वारा की जाती है और भीखू को उसकी ही पत्नी की हत्या के झूठे जुर्म तथा रुपयों के लिए अपनी पत्नी को जबरन धंधा करवाने के आरोप जेल भिजवा दिया जाता है। आक्रोश के जरिये गोविन्द निहलानी ने आदिवासी समाज, गरीब किसानों का पूंजीपतियों के द्वारा शोषण तथा इन्हीं पूंजीपतियों के द्वारा आदिवासी समाज के स्थान के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, महिलाओं पर अत्याचार दिखाया है। वहीं उन्होंने इस फिल्म में फिल्म के एक नायक भीखू और उसकी पत्नी नागी के बीच अंतरंग सम्बंध के जरिये ये दिखाने की कोशिश की है कि शहर के लोग आदिवासी तथा ग्रामीण इलाकों के व्यक्तियों के लिए ये राय बनाकर रखते हैं कि वो रुपयों के लिए अपने परिवार की महिलाओं को बेच देते हैं लेकिन अंतरंग संबंधों का ये दृश्य उनकी सोच पर कड़ा प्रहार करता है, दिखाता है कि आदिवासी और ग्रामीण समाज के लोग भी अपने परिवार से वैसा ही प्यार करते हैं जैसा कि शहरी क्षेत्र के लोग। भीखू के चरित्र को गोविन्द निहलानी ने एक भी संवाद नहीं दिया है, वो तथा उसका पूरा समाज उसके खिलाफ लगे झूठे आरोपों पर कुछ नहीं बोलता क्यूंकि सच्चाई की वजह से उनके आत्मसम्मान और स्वाभिमान को चोट पहुंचेगी। इसी वजह से अपने पिता की चिता को अग्नि देते समय वो अपनी बहन को मार डालता है ताकि उसकी बहन के साथ उसकी पत्नी की तरह सलूक न हो और फिर वो चिल्लाने लगता है। भीखू की ये चीख दर्शाती है। उसके आत्मसम्मान को, उस पर हुए अत्याचार, अन्याय और शोषण को, और भीखू की ये चीख नक्सलवाद के आरम्भ होने के कारणों की ओर भी इशारा करती है। इसी फिल्म के एक और नायक भास्कर कुलकर्णी जो की एक वकील है जो निस्वार्थ भाव से भीखू के लिए न्याय की लड़ाई लड़ रहा है। उसे पूंजीपतियों की तरफ से लालच दिया है, डराया-धमकाया जाता है, मारपीट की जाती है, गवाहों की खरीद-फरोख्त की जाती है। इन सब के जरिये गोविन्द निहलानी न्यायिक व्यवस्था के भ्रष्टाचार के यथार्थ को तो दिखाते ही हैं साथ ही सिनेमाई दृश्यों से उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ एक कड़ा प्रहार भी करते हैं। इस फिल्म का एक पात्र वकील दुसाने, जो कि पूंजीपतियों की तरफ से केस लड़ रहा है, वो खुद एक गरीब आदिवासी था, जो खुद एक अमीर वकील बन चुका है। इसको सब सच पता होने के बाद भी वो अपने ही मूल को भूल चूका है। वकील दुसाने पूंजीवाद का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। जिसके दुष्प्रभावों को गोविन्द निहलानी ने दुसाने के चरित्र के जरिए दिखाया है।

गोविन्द निहलानी की फिल्म अर्धसत्य में गोविन्द अपनी फिल्म आक्रोश से एक कदम आगे बढ़कर अपने नायक को व्यवस्था का एक अंग बनाते हैं । ये फिल्म समाज के एक ऐसे युवा अनंत वेलणकर की कहानी है, जो बनना तो चाहता था प्रोफेसर, लेकिन अपनी इच्छाओं का दमकन करके वह अपने पिता की इच्छा से वो अपनी पुलिस सेवा में आया। उसका पिता घर का मुखिया होने के कारण घर में अनंत की माँ के साथ मारपीट करता है और सब काम अपनी मर्जी से करवाता है। पुलिस सेवा आने के बाद जब अनंत का पिता अनंत से मिलने आता है और कहता है कि अनंत को उसके पिता की मर्जी की लड़की से ही शादी करनी होगी लेकिन अनंत मना कर देता है। जब रात को अनंत और उसका पिता बैठकर शराब पीते हैं, तो अनंत अपनी भड़ास अपने पिता पर निकालते हुए कहता है कि वो एक घटिया इंसान है जो उसकी माँ पर हाथ उठाता है। जब अनंत अपनी पुलिस की सर्विस बह्म्बे (अब का मुंबई) में ज्वाइन करता है, तो उसकी मुलाकात ज्योत्सना गोखले से होती है, जो बॉम्बे के एक कॉलेज में साहित्य की प्रवक्ता है जिससे वो प्यार करने लगता है। लेकिन ज्योत्स्ना पुलिस को एक ऐसे संस्थान के रूप में जानती है जो भ्रष्टाचार में लिप्त है तथा लोगों पर अन्याय करती है। वो अनंत से पुलिस की नौकरी छोड़ने को कहती है लेकिन अनंत के ऐसा न करने पर ज्योत्सना अनंत से रिश्ता तोड़ लेती है। वहीं पुलिस सेवा में अनंत, रामा शेट्टी नाम के माफिया के गुंडाराज को खत्म करना चाहता है तो उसी के अधिकारी भ्रष्टाचार के कारण उसे ये नहीं करने देते, उल्टा वो अनंत से गलत ढंग से मजदूरों के आंदोलन को दबवाते हैं तथा उसे रामा शेट्टी जब म्युनिसिपल का चुनाव लड़ता है तो उसकी सुरक्षा में लगा देते हैं । जब अंनत को उसकी पुलिस सेवा के कार्य में बहादुरी के लिए मेडल मिलने वाला होता है तो गलत तरीके से उसका नाम हटाकर किसी और को दे दिया जाता है। इन सब से हताश होकर वो शराब पीने लगता है जिस वजह से वो अपने ही थाने में बंद एक कैदी को इतना मारता है कि उसकी मौत हो जाती है। अनंत को निलम्बित कर दिया जाता है। मजबूरी में अपनी नौकरी बचाने जब वो रामा शेट्टी से मदद मांगने जाता है तो वहां रमा शेट्टी उससे कहता है कि अगर वो उसकी नौकरी बचाएगा तो अनंत को रामा के लिए काम करना पड़ेगा। ये प्रस्ताव सुनकर अंनत के आत्मसम्मान को चोट लगती है तो वो रामा शेट्टी को मार देता है और पुलिस थाने आकर अपना जुर्म कर लेता है । गोविन्द निहलानी ने फिल्म अर्द्धसत्य के युवा नायक के जरिए एक युवा की अपने परिवार के लिए अपनी इच्छाओं की कुर्बानी तथा पुलिस महकमे के भ्रष्टाचार तथा उस भ्रष्टाचार से एक युवा के प्यार तथा ईमानदारी की बर्बादी की कहानी तथा इसी भ्रष्टाचार के जरिए मजदूरों के शोषण की कहानी बहुत ही यथार्थपरक तरीके से कही है। पुलिस महकमे के भ्रष्टाचार से बर्बाद हुए पुलिस ऑफिसर माइक लोबो के चरित्र के जरिए बड़ी कटु सच्चाई के साथ गोविन्द निहालानी ने अपनी फिल्म में दर्शाया है।

गोविन्द निहलानी की ये दोनों फिल्में सामाजिक सरोकार के यथार्थ से जुडी हुई हैं, जहाँ वो अपनी सामाजिक तथा राजनीतिक समझ-बूझ से तत्कालीन समय में समाज की गहन परेशानियों एवं समस्याओं को बखूबी अपनी सिनेमाई भाषा के माध्यम से दर्शाते व दिखाते हैं। जो प्रासांगिक होने के साथ दिल को भी छू जाती है। उत्तरदातों से प्राप्त उत्तर बताते हैं कि गोविन्द निहलानी की ये दोनों फिल्में अपने यथार्थ से समाज को उसके एक कटु सच से तो अवगत कराती ही हैं, साथ ही गोविन्द की फिल्में सामाजिक सरोकार के विषयों का यथार्थ दिखते हुए समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव भी डालती हैं ।

***निष्कर्ष :***

सिनेमा मनोरंजन तथा व्यवसाय के लिए बनाया जाता है। जिसमें उसके अपने दौर के समाज की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में होती है। गोविन्द निहलानी का सिनेमा अपने दौर के समाज को बड़े यथार्थ रूप में प्रस्तुत करता है। फिल्म आक्रोश तथा अर्धसत्य के जरिए ये फिल्मकार तत्कालीन समय की न्यायिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार, आदिवासी तथा ग्रामीण लोगों का पूंजीपतियों के द्वारा शोषण, पुलिस व्यवस्था में भ्रष्टाचार तथा युवाओं के अपनी-अपनी परिस्थितियों से संघर्ष की कहानी एक ऐसे यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करते हैं कि दर्शक उन परिस्थितियों को बदलने के चिंतन में आ जाता है। वहीं इस अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि सिनेमा समाज के बिना अधूरा है तथा समाज सिनेमा के बिना। गोविन्द निहलानी जैसे फिल्मकार समाजिक सरोकारों पर उनके यर्थाथ से छेड़छाड़ न करते हुए एक ऐसा सिनेमा बनाते हैं जो समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव तो डालता ही है, साथ ही समाज और सिनेमा का एक अटूट संबंध भी दिखाता है। वहीं भारतीय हिंदी सिनेमा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित भी करता है।

***सन्दर्भ - ग्रन्थ :***

१. राव, डॉ. सी. भास्कर, फिल्म और फिल्मकार, पृष्ठ संख्या २४
२. पारख जवरीमल्ल, हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, पृष्ठ संख्या १०१
३.पारख, जवरीमल्लः हिंदी सिनेमा का समाज शास्त्र, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली,२००६
४.पारख, जवरीमल्लः लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, अनामिका पब्लिशर्स एंडडिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड,२००१
५.राव, डॉ. सी. भास्करः फिल्म और फिल्मकार, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली,२०१०
६.श्रीवास्तव, संजीवः हिंदी सिनेमा का इतिहास, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, २००६
७.ओझा, डॉ. अनुपमः भारतीय सिने सिद्धान्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, २००६
८.अग्रवाल, प्रहलादः प्रसाद, कमलाः स्वयं, प्रकाशनः शर्मा, राजेंद्रः हिंदी सिनेमाः बीसवीं से इक्कीसवी सदी तक, २००६
९.अग्रवाल, डॉ. विजयः सिनेमा और समाज, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, १९९५
१०.अग्रवाल, डॉ. विजयः सिनेमा की संवेदना, प्रतिमा प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९५
११.चड्ढ़ा, मनमोहनः हिंदी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९०
१२. चौधरी, श्याम सुन्दरः भारतीय सिनेमाः समाज के आइने में, समय प्रकाशन, दिल्ली, २००२

***बेवसाइट सन्दर्भ :***

1. http://www .google.com/
2.https://en.wikipedia.org/wiki/Govind_Nihalani
3.https://en.wikipedia.org/wiki/Aakrosh_(1980_film)
4.https://en.wikipedia.org/wiki/Ardh_Satya

***ग्रंथालय :***

१. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org